राष्ट्रीय शिक्षा नीति में हिन्दी–विकास की संभावनाएं

नरेश कुमार
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की।

शिक्षा नीति किसी भी राष्ट्र की मूलभूत आवश्यकता होती है। जिसमें अतीत का विश्लेषण, वर्तमान की आवश्यकताएं और भविष्य की आकांक्षाएं निहित होती हैं।

गांधी जी ने कहा था। "सच्ची शिक्षा वह है जो बालकों के आध्यात्मिक, बौद्धिक तथा शारीरिक विकास हेतु प्रेरित करती है। उसे संपूर्ण बनाने का प्रयास करती हैं।"

डॉ. राधाकृष्णन जी ने कहा था "शिक्षा केवल आजीविका प्राप्त करने का साधन नहीं है, न ही यह नागरिकों को शिक्षित करने का अभिकरण है, न ही यह प्रारंभिक विचार है। यह जीवन में आत्मा का आरंभ है, सत्य तथा कर्तव्य पालन हेतु मानवीय आत्मा का प्रशिक्षण है, यह दूसरा जन्म है, जिसे दिव्यात्म जन्म कहा जा सकता है।

जून 2017 में पूर्व इसरो प्रमुख डॉ. के. कस्तूरी रंगन की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया। समिति ने मई 2019 में राष्ट्रीय नीति का प्रारूप तैयार किया। तत्पश्चात मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल ने एक व्यापक दूरदर्शी और लोकतांत्रिक नीति अपनाते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति से संबंधित सुझाव लेने के लिए देश के कोने–कोने से सभी वर्गो से सुझाव मंगवाये। सभी वर्ग के लोगों की राय ली गई।

सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास

भारत में यह पहली बार हुआ। भारत की नयी शिक्षा नीति बनाने के लिए देश में व्यापक जन संवाद हुआ। शिक्षाविद, अध्यापक प्राथमिक से लेकर विद्यापीठ तक, ज्येष्ठ श्रेष्ठ शिक्षा जगत से दीर्घ अनुभव समृद्ध अभिभावक, सामान्य नागरिक, शहरी और ग्रामीण जन प्रतिनिधि, सामान्य जन और छात्रों से भी सुझाव मंगवाये गये। विचार मंथन किया गया। जन आंकांक्षाओं के अनुरूप एवं राष्ट्रीय आवश्यकताओं और चुनौतियों के अनुरूप केन्द्रीय मंत्री मंडल द्वारा नई शिक्षा नीति को मंजूरी दी गई।

हमारे प्रधानमंत्री जी ने कहा "**यह शिक्षा के क्षेत्र में बहु प्रतीक्षित सुधार है**। जिसमें लाखों लोगों का जीवन बदल जाएगा। एक भारत श्रेष्ठ भारत पहल के तहत इसमें संस्कृत समेत समस्त भारतीय भाषाओं को बढ़ावा दिया जाएगा।"

डॉ. रमेश पोखरियाल जी ने कहा "देश के प्रधानमंत्री जी ने एक नए भारत निर्माण की बात कही है। उस नए भारत के निर्माण में यह शिक्षा नीति 2020 मील का पत्थर साबित हुई।" यह ज्ञान–विज्ञान, अनुसंधान, नवाचार प्रोद्योगिकी से युक्त संस्कार–क्षम और मूल्यपरक तथा हर क्षेत्र में हर परिस्थिति का मुकाबला करने वाली होगी। पूरी दुनिया के लिए भारत में ज्ञान की महाशक्ति के रूप में यह शिक्षा नीति ऊभर कर सामने आएगी । नई शिक्षा नीति के विस्तार में शिक्षा विद्यार्थियों के जीवन के सभी पक्षों और क्षमताओं का संतुलित विकास करे, इसके लिए पाठयक्रम में विज्ञान और गणित के अतिरिक्त बुनियादी कला शिल्प, मानविकी, खेल, फिटनेस, भाषाओं, साहित्य, संस्कृति और मूल्यों का भी समावेश किया गया है। शिक्षा से चरित्र निर्माण होना चाहिए। शिक्षार्थियों में नैतिकता, तार्किकता, करूणा, संवेदनशीलता विकसित होनी चाहिए। साथ ही रोजगार के लिए सक्षम बनना चाहिए। इस दृष्टि से भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रावधान किया गया है।

भारतीय ज्ञान, संस्कृति और दर्शन का विश्व में बड़ा प्रभाव है। बालक आत्मज्ञान के सहारे स्वयं को जाने। और उसकी जड़ों से जुड़कर "ग्लोबल सिटिजन" बने। यह समूची शिक्षा व्यवस्था में

निर्देशित है। ऑन लाईन शिक्षा पद्धति पर बल दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा एक संवैधानिक हक है इसकी परिपूर्ति का उत्तरदायित्व अधोरेखित किया गया है। संवैधानिक जीवन मूल्यों की सविस्तार चर्चा है और इसी क्रम में स्वच्छता ज्येष्ठों का आदर, सेवा निष्काम कर्म, शांति, त्याग भी विवेचित हैं। अध्ययन में कौशल्य और प्रयोग पर बल दिया गया है। पांचवी कक्षा तक मातृभाषा, स्थानीय भाषा, क्षेत्रीय भाषा, पढ़ाई का माध्यम कही गई हैं। कक्षा आठवीं तक या उससे आगे भी इस अवधि को बढ़ाया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्री–स्कूलिंग के साथ 12 साल स्कूली शिक्षा और तीन साल की आंगनवाड़ी होगी। पढ़ने–लिखने और जोड़ तथा बाकी संख्यात्मक ज्ञान की बुनियादी योग्यता पर जोर दिया जाएगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में घोषित किया गया है कि यह एक राष्ट्रीय एजेन्डा है। यह अपने बच्चों, युवाओं के भविष्य को बदलने उसे रूप आकार प्रदान करता साधन सिद्ध होगा। यह फिलहाल अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं में हैं। 12वीं की परीक्षा का सार्वत्रीकरण का विचार है।

15 अगस्त सन 1947 को आजादी के प्रथम भाषण में पं. जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि **इस मध्यरात्रि में जब विश्व सो रहा होगा उस समय भारत जगेगा।** जीवन और स्वतंत्रता के लिए आधुनिक भारत के ज्ञान मंदिरों का निर्माण करना होगा।

आत्मनिर्भर भारत, मेक इन इन्डिया, स्किल इंडिया, खुशहाल भारत, सबका साथ सबका विकास'' आज सर्वत्र चर्चा में है।

7 सितम्बर 2020 को हमारे प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर जो अभिभाषण दिया उसमें स्पष्ट किया है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारत देश को ज्ञान केन्द्रित बनायेगी।

महामहिम पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविद जी ने कहा था 'नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 21वीं सदी की आवश्यकताओं आकांक्षाओं पर विचार चिंतन कर तैयार की गई है। देश के युवा वर्ग को आगे बढ़ने में पूरक सिद्ध होगी। प्रधानमंत्री जी की प्रेरणादायी भूमिका और दूरदर्शी नेतृत्व के कारण ही यह शिक्षा दस्तावेज साकार हो पाये हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में पुस्तक ज्ञान की जगह प्रत्यक्ष कृति ज्ञान अनुभवों द्वारा ज्ञान वृद्धि पर बल दिया गया हैं। जिसके लिए पाठयक्रम के ढांचे में बदलाव किया गया है, रूप बदला गया है। जिस प्रकार विदेश पर राष्ट्रनीति आर्थिक नीति का महत्व है उसी प्रकार शिक्षा नीति भी है। अतः राष्ट्रीय नीति योजना को यशस्वी बनाने की सभी की सामूहिक जिम्मेवारी है। शिक्षा का दायित्व केन्द्र सरकार, राज्य सरकार, स्थानीय स्वराज्य संस्था सभी का होता है। यह सामूहिक जिम्मेदारी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति सिर्फ शिक्षा में सुधार मात्र नहीं यह 21वीं सदी के भारत के सामाजिक आर्थिक संबंध में सुधार के लिए दिशा निर्देशित करने के लिए है।

शिक्षा, ज्ञान संस्कार जीवन को संस्कारित उन्नत और उच्च शिखर की ओर बढ़ने के लिए दी जाती है। मनुष्य तो जन्म से धुली पुछी स्लेट के समान होता है उसे संस्कारित किया जाता है। शिक्षा के चार मुख्य घटक हैं। शिक्षक, शिक्षार्थी, शिक्षा संस्था और शिक्षा माध्यम भाषा। भाषा सरल हो, सहज हो कर्ण सुखद हो और सहज ग्राह्य हो। बहुसंख्य के उपयोग व्यवहार में हो। माँ की भाषा व्यवहार की भाषा होती है। सहज होती है और मधुर तो होती ही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मातृभाषा में शिक्षारंभ की जाय।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में हिन्दी

उत्तर प्रदेश, मध्य भारत, हिमाचल प्रदेश, बिहार, राजस्थान, हरियाणा और दिल्ली हिन्दी भाषी राज्य हैं। तिहत्तर करोड़ से अधिक लोगों की मातृभाषा हिन्दी है। घर परिवार परिसर में बोली व्यवहार संपर्क की भाषा हिन्दी है। उक्त सात हिन्दी राज्यों में बोली जाने वाली भाषा उपभाषाओं की संख्या दो हजार सात सौ इकसठ है। भाषाविद डॉ. बाहरी का यह सर्वेक्षण है। अकेले राजस्थान

राज्य में ही जयपुरी, जोधपुरी, बिकानेरी, अलवरी, चित्तौड़, हाडोती, जैसलमेरी और उसकी उपभाषायें हजारों की सख्या में हैं। उत्तर प्रदेश में बोली जाने वाली बोली भाषायें और उपभाषाओं की संख्या तीन हजार के आसपास है। हिन्दी इन प्रदेशों की व्यवहार भाषा है। स्कूल में इसकी भाषा का व्यवहार अपेक्षित है। अध्यापन हेतु पाठ्य पुस्तकों की उपलब्धता करा दी गई हैं। एन.सी. ई.आर.टी., केन्द्रीय पाठ्य पुस्तक मंडल, नेशनल बुक ट्रस्ट, प्रगति प्रकाशन दिल्ली, राजस्थान साहित्य अकादमी, जयपुर द्वारा बाल शिक्षा सुलभ पुस्तकें सचित्र तैयार की गई हैं। कक्षा आठ तक के अभ्यास क्रम इतिहास, भूगोल,समाजशास्त्र, विज्ञान प्रथम परिचय, पर्यावरण प्रारभिक गणित, तंत्रशिक्षण साधन सहायक पुस्तकें अब बाजार में आने लगी हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रथम मातृभाषा, द्वितीय राज्यभाषा क्षेत्रीय भाषा और तीसरी अंतर्राष्ट्रीय आंगल भाषा है। हमारे देश में सर्वाधिक समझी जाने वाली बोली जाने वाली भाषा हिन्दी है। जैसे–

हिन्दी मेरी भाषा हैं, हिन्दी मेरी आशा है,
हिन्दी का उत्थान करना, यही हमारी जिज्ञासा है
हिन्दी की बोली अनमोल, एक शब्द के कई विलोम

हिन्दी हिन्द हिमालय पर, ऊंचे आसन वाली है,
हिन्दी जयहिन्द और वन्देमातरम के उच्चारण वाली है।

राष्ट्रभाषा की मान्यता न मिलने पर यह व्यापार, व्यवहार, तीर्थाटन में प्रयुक्त भाषा रही है। हमारे देवी देवताओं के केन्द्र राम व कृष्ण की जन्म भूमि अयोध्या व मथुरा चार धाम यात्रा केन्द्र गंगोत्री, जमनोत्री, बद्री, केदार हैं। अपनी सार्वभौमिकता, सरलता, व्यापकता के कारण इसका सर्वत्र प्रयोग होता रहा हैं।

आजादी की लड़ाई की भाषा हिन्दी रही। लोकमान्य तिलक जी ने **स्वतंत्रता स्वराज्य स्वदेशी और स्वभाषा का नारा लगाया** था। सोता देश हडबडाकर जाग उठा था। सन् 1906 में तिलक जी ने काशी में अपना भाषण हिन्दी में दिया था। हिन्दी सब तबके के लोग समझते हैं। इस भाषा की अपनी प्रतिष्ठा है। बंगला भाषा की भाव प्रवणता, गुजराती का लालित्य, मराठी की ओजस्विता कश्मीरी पंजाबी, असमिया उडिंया के प्रवाह से हिन्दी सम्पन्न हुई है। दक्षिणात्य भाषाओं से शब्द लालित्य और अभिव्यक्ति बल इसे प्राप्त है।

प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन में युनेस्को के मिस्टर ऑशर डिलिमॉन ने कहा था कि हिन्दी विश्व में सबसे अधिक प्रयोग की जाने वाली तीसरे क्रमांक की भाषा है। ज्ञान दर्शन, अध्यात्म ज्योतिष, गणित, कला, साहित्य भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की धरोहर का जतन करती यह समृद्ध भाषा है।

दो विश्व हिंदी सम्मेलन एक न्यूयार्क का और दूसरा मॉरिशस का हिंदी की प्रतिष्ठा है। विकसित राष्ट्रों में अमेरिका आज प्रथम क्रमांक पर है। अपने उत्पाद बेचने के लिए अधिक से अधिक लाभ कमाने के लिए बहुत बड़ा बाजार भारत है। यहां के अधिसंख्य लोग गांव में हैं। उन तक अपने उत्पाद बेचने के लिए उनकी भाषा में बोलना जरूरी है। भाषा जोड़ने वाली दोस्ती का प्रभावी माध्यम हैं। चेम्बर ऑफ कामर्स यू एस ए सैनफानिसिस्को ने व्यावहारिक हिंदी भाषा सीखने के लिए पूरे छः हफ्ते का पाठयक्रम तैयार किया है। प्रशिक्षाणार्थी अमेरिकन वियतनामी, मैक्सिकन, चीनी, जापानी और आयरिश हैं। टक्सास की राजधानी ऑस्टिन में हिंदी ब्रजभाषा शोध संस्थान आगरा के शोध संस्थान को टक्कर देता है। इन तथ्यों से यह पुष्टि होती है कि भविष्य में हिंदी के समुचित विकास की संभावनाएं प्रबल हैं।